DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
भाषाओं का वर्गीकरण
Part -4
LIVE 25-04-2024 05:00 PM

पारिवारिक वर्गीकरण

(Geneological Classification)

विश्व की समस्त भाषाओं को कुछ प्रमुख परिवारों में विभाजित करना पारिवारिक वर्गीकरण कहलाता है। एक मूल भाषा से कालान्तर में अनेक भाषाएँ विकसित हो जाती हैं। वे सभी भाषाएँ एक ही परिवार की मानी जाती हैं। जैसे एक पूर्वज से अनेक पीढ़ियाँ विकसित हो जाती हैं और बहुत समय के बाद उन पीढ़ियों की अनेक पीढ़ियाँ बन जाती हैं उसी प्रकार एक मूल भाषा से भाषाओं की पीढ़ियाँ विकसित होकर परस्पर स्वतंत्र हो जाती है । परन्तु रूप रचना और शब्द साम्य के आधार पर उन सब भाषाओं की सामान्य विशेषताओं को जाना जा सकता है और उसी आधार पर उनके परिवर का निर्णय किया जा सकता है ।

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

संस्कृत भाषा से परिचय होने के बाद अठारहवीं शताब्दी के अन्त में यूरोप में भाषाओं की परस्पर तुलना प्रारम्भ हुई और तुलनात्मक भाषा विज्ञान का जन्म हुआ। तुलनात्मक अध्ययन के फलस्वरूप भाषाओं के विभिन्न परिवारों का निर्णय हुआ है। पारिवारिक वर्गीकरण को एतिहासिक वर्गीकरण भी कहा जाता है क्योंकि परिवारों का विकास क्रमशः हुआ है और भाषाओं के ऐतिहासिक विकास को ध्यान में रखते हुए ही अनेक भाषाओं के मूल परिवार का निर्णय हो सका है।

आकृतिमूलक – शब्द, ध्वनि, वाक्य स्थल।

पारिवारिक – अर्थ, शब्द, वाक्य

पारिवारिक वर्गीकरण का आधार

पारिवारिक वर्गीकरण के निम्नलिखित चार आधार माने गए हैं-

- ✓ स्थानिक समीपता,
- ✓ शब्दों की समानता,
- ✓ व्याकरण - साम्य, तथा
- ✓ ध्वनि - साम्य ।

पारिवारिक वर्गीकरण के आधार के सम्बन्ध में डॉ. बाबू राम सक्सेना का कथन है- "पारिवारिक सम्बन्ध के लिए प्रायः स्थानिक समीपता से विचार उठता है, शब्दों की समानता से विचार को पुष्टि मिलती है, व्याकरण - साम्य से विचार वादरूप हो जात है और यदि ध्वनि - साम्य भी निश्चित हो जाए तो सम्बन्ध पूरी तरह निश्चय - कोटि को पहुंच जाता है। यदि व्याकरण - साम्य न मिलता हो, तो विचार, विचार-कोटि से ऊपर नहीं उठ पाता।""

डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा' ने पारिवारिक वर्गीकरण के आधार के रूप में छह तत्त्वों का उल्लेख किया है-

- ✓ ध्वनि
- ✓ पद - रचना
- ✓ वाक्य - रचना
- ✓ अर्थ
- ✓ शब्द - भाण्डार
- ✓ स्थानिक निकटता ।

1. स्थानिक समीपता: आस पास के क्षेत्र में बोली जानेवाली भाषाएँ प्रायः एक ही परिवार की होती हैं । जैसे भारत में हिन्दी, गुजराती, मराठी आदि । इसी प्रकार दक्षिण की भाषाएँ तमिल, तेलगू, मलयालम और कन्नड़ । इसलिए भौगोलिक समीपता को पारिवारिक वर्गीकरण का आधार माना गया है। किन्तु केवल स्थानिक समीपता पारिवारिक वर्गीकरण का कोई प्रामाणिक आधार नहीं है। कई बार आसपास के क्षेत्र में भिन्न परिवारों की भाषाएँ बोली जाती हैं। जैसे 'मराठी और तेलुगु' या 'मराठी और कन्नड़' या 'तेलुगु और उड़िया' यद्यपि भौगोलिक दृष्टि से एक-दूसरे के नितान्त समीप हैं परन्तु ये भिन्न भाषाएँ हैं ।

इसके विपरीत, हिन्दी और यूरोप की भाषाएँ दूर-दूर की भाषाएँ हैं, फिर भी ये दोनों एक ही परिवार की भाषाएं हैं। निष्कर्ष यह है कि भाषाओं की स्थानिक समीपता एक आधार अवश्य है किन्तु केवल इसी आधार पर किन्हीं भाषाओं का एक की परिवार की मानना भ्रामक है ।

2. शब्दों की समानताः शब्दों की समानता के आधार पर भाषाओं के परिवार का निर्णय करने में सहायता मिलती है । प्रायः पारिवारिक सम्बन्धों को अभिव्यक्त करने वाले शब्दों में समानता एक परिवार की द्योतक है ।

माता-पिता, भाई-बहिन आदि पारिवारिक सम्बन्धों के द्योतक शब्द; आग, पानी, अन्न, चूल्हा आदि सर्वोपयोगी वस्तुओं के वाचक शब्द; मैं, तू, वह आदि सर्वनाम शब्दः एक, दो, तीन आदि संख्यावाची शब्द; तथा खाना-पीना, उठना-बैठना आदि सर्वसामान्य क्रियावाची शब्दों की समानता एक परिवार के द्योतक हैं। उदाहरण के लिए - भारोपीय परिवार की विभिन्न भाषाओं में 'पिता' पारिवारिक सम्बन्ध-वाचक तथा 'सात' संख्या वाचक शब्द इस प्रकार हैं-

संस्कृत	फारसी	ग्रीक	लैटिन	जर्मन	अंग्रेजी	हिन्दी
पितृ	पिदर	Pater	Pater	Vater	Father	पिता
सप्त	हफ्त	hepta	Septem	Sieben	Seven	सात

इन दोनों शब्दों की समानता के आधार पर माना गया है कि उपर्युक्त सभी भाषाएँ एक ही परिवार (भारोपीय) की भाषाएँ हैं। इन शब्दों में थोड़ा-बहुत ध्वनि - सम्बन्धी भेद है जो ध्वनि-नियमों के अनुसार ही है, जिससे उनकी समानता का खण्डन नहीं होता है ।

केवल ध्वनि साम्य के आधार पर शब्दों को एक परिवार का नहीं माना जा सकता। ध्वनि के साथ अर्थ - साम्य का होना भी आवश्यक है जो ध्वनि-साम्य तो रखते हैं, किन्तु अर्थ - साम्य नहीं रखते उन्हें एक परिवार का नहीं माना जा सकता। जैसे, हिन्दी का 'मेल' तथा अंग्रेजी का mail हिन्दी का फूल और अंग्रेजी का fool ध्वनि साम्य तो रखते हैं परन्तु अर्थ साम्य नहीं। इसलिए इन शब्दों को एक परिवार नहीं कहा जा सकता।

ध्वनि साम्य और अर्थ साम्य होने पर भी सहसा यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि ऐसे शब्द एक ही परिवार के हैं। ध्वन्यात्मक शब्द भी संयोग से एक जैसे हो सकते हैं जैसे बिल्ली के लिए म्यांऊ शब्द अनेक भाषाओं में मिलता है। हिन्दी का भौं भौं और अंग्रेजी का Bow-Bow में ध्वन्यात्मक अनुकरण के कारण समानता है।

3. व्याकरण-साम्य: व्याकरण साम्य भाषाओं के एक परिवार का होने का सबसे प्रबल आधार है। व्याकरण - साम्य से तात्पर्य है, पदरचना तथा वाक्य-रचना की प्रक्रिया में समानता । अतः शब्दों की समानता से अधिक महत्व व्याकरण - साम्य का है। क्योंकि, शब्दों का आदान-प्रदान होने पर भी सम्पर्क में आने वाली हिन्दीं भी भाषाओं में व्याकरण - साम्य नहीं हो पाता है। उसकी पद-रचना तथा वाक्य-रचना की शैलीं अपनी ही रहती है। उदाहरण के लिए - हिन्दी मैं अंग्रेजी शब्दों के साथ व्याकरण हिन्दी का ही प्रयुक्त होता है। जैसे स्कूलों, आदि ।

अतः जहाँ शब्दों की समानता से किन्हीं भाषाओं के एक परिवार का होने की मात्र सम्भावना प्रकट होती है, वहाँ व्याकरण - साम्य से उस सम्भावना की पुष्टि हो जाती है ।

4. ध्वनि-साम्यः किसी एक परिवार की मूल ध्वनियाँ यद्यपि कालान्तर में स्थान भेद के कारण परिवर्तित हो जाती हैं परन्तु वह परिवर्तन एक नियमित दिशा में होता है। उदाहरणस्वरूप भारोपीय भाषा की मूल ध्वनियाँ स्थान भेद के कारण भिन्न-भिन्न रूपों में मिलती हैं परन्तु यह परिवर्तन एक नियमित दिशा में हुआ है। ग्रिम-नियम आदि ध्वनि - नियमों का विचार करके ही इन ध्वनियों को एक मूल ध्वनि के परिवर्तित रूप माना गया है। अतः ध्वनि - साम्य को भाषाओं के एक परिवार के होने का आधार माना गया है ।

1 - 2
2 - 3
4 - 3
3 - 1

बुक - बुख

अष्ट = आठ

पिता Father

भाई - Brother

ब्रदर

समीक्षा - पारिवारिक वर्गीकरण का उपर्युक्त आधार अधिक वैज्ञानिक एवं पूर्ण हैं, किन्तु इसमें भी अनेक कमियाँ हैं । **जैसे-**

1. पर्याप्त प्रामाणिक सामग्री का अभाव, अनेक भाषाएँ लुप्त हो चुकी हैं तथा अनेक भाषाओं का प्राचीन रूप हमें ज्ञात नहीं है ।

2. अनेक प्राचीन भाषाओं का समकालिक न होना ।

3. अभी तक संसार की सभी भाषाओं का पर्याप्त अध्ययन न होना । कुछ भाषाओं का अध्ययन बहुत विस्तार से हुआ है तो कुछ का बहुत ही सीमित ।

विश्व के भाषा-परिवारों का संक्षिप्त परिचय

परिवारों की संख्या यद्यपि अभी तक अनिश्चित है, क्योंकि 'फ्रेडरिक मूलर' आदि विद्वान् जहाँ 100 भाषा-परिवारों की कल्पना करते हैं, वहाँ अन्य विद्वानों की कल्पना 250 परिवारों तक जा पहुंचती है। कुछ विद्वान् केवल 10 भाषा-परिवार ही मानते हैं । 'डॉ. धीरेन्द्र वर्मा' ने 12 भाषा - परिवार गिनाये हैं, जबकि 'डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा' ने 'अपेक्षाकृत निर्विवाद और प्रमुख भाषा-परिवारों की संख्या 18 मानी है ।

सम्पूर्ण भाषाओं को, भौगोलिक आधार पर, पहले चार खण्डों में विभाजित किया है,

जैसे- (1) यूरेशिया खण्ड (यूरोप - एशिया)

(2) अफ्रीका खण्ड

(3) प्रशान्त महासागर खण्ड

(4) अमरीका खण्ड

इसके पश्चात् इन विद्वानों ने उपर्युक्त खण्डों में अनेक भाषा-परिवारों की गणना की है।

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

यूरेशिया खण्ड

1. भारत यूरोपीय परिवार ।   (भारोपीय परिवार ।)
2. द्राविड़ परिवार ।
3. बुरूशस्की परिवार ।
4. यूराल - अल्ताई परिवार ।
5. काकेशी परिवार ।
6. चीनी परिवार ।
7. जापानी - कोरियाई परिवार ।
8. उत्युत्तरी (हाइपरबोरी) परिवार ।
9. बास्क परिवार ।

10. सामी - हामी भाषा परिवार

10. साभी - हामी परिवार (सामी- हामी परिवार की गणन यूरेशिया तथा अफ्रीका इन दोनों खण्डों में की जाती है

अफ्रीका खण्ड

11. सूडानी परिवार ।
12. बन्तू परिवार ।
13. होतेन्तोत - बुशमैनी परिवार ।

प्रशान्त महासागरीय खण्ड

14. मलय - बहुद्वीपीय परिवार ।
15. पापुई परिवार ।
16. आस्ट्रेलियाई परिवार ।
17. दक्षिण - पूर्व - एशियाई परिवार ।

अमरीका खण्ड

18. अमरीकी परिवार ।

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

उपर्युक्त भाषा - परिवारों का संक्षिप्त परिचय क्रमशः इस प्रकार है-

द्राविड़ परिवार

क्षेत्रः इसकी प्रमुख भाषाएँ और क्षेत्र ये हैं-

1. तमिल (मद्रास में)
2. तेलुगु (आन्ध्र प्रदेश में)
3. कन्नड़ (मैसुर में)
4. मलयालयम (केरल में) ।

इसी परिवार में गोंडी (मध्य प्रदेश, बुन्देलखंड), कुरुख या ओराओं (बिहार, उड़ीसा), ब्राहुई (बलूचिस्तान) भाषाएँ भी हैं

1. तमिलः तमिलनाडु और लंका में बोली जाती है । तृतीय शताब्दी ई. पू. से साहित्य मिलता है। यह अत्यन्त समृद्ध भाषा है । इसमें उच्चकोटि का साहित्य मिलता है ।

2. तेलुगुः आन्ध्रप्रदेश की भाषा है। आन्ध्र जाति अत्यन्त प्राचीन है । आन्ध्र जाति का नाम ऐतरेय ब्राह्मण, महाभारत और अशोका के अभिलेखों में मिलता है। इसके बोलने वालों की संख्या 3 करोड़ के लगभग है। इसमें संस्कृत शब्द बहुत

समाविष्ट हैं । 11वीं सदी से इसका साहित्य मिलता है। इसमें भी तमिल के तुल्य उच्चकोटि का साहित्य है । भाषा में माधुर्य है।

3. कन्नड़: मैसूर राज्य की भाषा है। लिपि तेलुगु से और भाषा तमिल से मिलती-जुलती है। इसमें भी उच्च साहित्य है ।

4. मलयालमः केरल की भाषा है। संस्कृत शब्दों की बहुलता है । यह तमिल भाषा की ही एक शाखा मानी जाती है। इसमें 13वीं सदी से उच्च कोटि का साहित्य मिलता है । द्राविड़ भाषा-भाषियों की संख्या 8 करोड़ के लगभग है ।

मुख्य विशेषताएं

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

1. इस परिवार की भाषाएँ अश्लिष्ट योगात्मक हैं।

2. इनमें ए-ऍ, ओ ओ ह्रस्व और दीर्घ दोनों हैं ।

3. इनमें यूराल - अल्ताई परिवार के तुल्य स्वर - अनुरूपता है ।

4. इनमें अन्तिम व्यंजन के बाद अतिलघु अ जोड़ा जाता है।

5. संज्ञाओं का विभाग विवेकी अविवेकी का उच्च जातीय-निम्नजातीय के आधार पर होता है।

6. दो वचन और तीन लिंग हैं। लिX का निर्धारण जीवित या निर्जीव वस्तु के आधार पर होता है। लिंग-बोध के लिए 'पुरुष' या 'स्त्री' वाचक शब्द जोड़े जाते हैं।

7. विशेषणों के रूप संज्ञा के अनुसार नहीं चलते हैं ।

8. विभक्तियों का काम परसर्गों या प्रत्ययों से लिया जाता है ।

9. क्रिया में कृदन्त रूपों की अधिकता है। कर्मवाच्य नहीं होता है ।

10. 'निषोधात्मक वाच्य' भी होता है। इसमें लुङ् लकार होता है ।

11. मूर्धन्य (टवर्ग) ध्वनियों की प्रधानता है ।

बुरुशस्की (खजुना) परिवार

क्षेत्रः यह भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में बोली जाती हैं। कुछ विद्वान् इसका सम्बन्ध मुंडा और द्राविड़ परिवार से मानते हैं ।

मुख्य विशेषताएँ

यह सर्वनाम - प्रधान भाषा है। इसमें संमानित पुरुष, स्त्री और समकक्ष व्यक्तियों के लिए पृथक् सम्बोधन हैं ।

काकेशी परिवार

क्षेत्रः इसका क्षेत्र काकेशस पवर्त के समीप का प्रदेश है। यह क्षेत्र काला सागर और कैस्पियन समुद्र के मध्य में है। इसकी प्रमुख भाषाएँ है - (1) उत्तरीवर्ग - कबडिन, सर्कासियन, चेचेनिश, लेगियन । (2) दक्षिणीवर्ग - जार्जियन, मिग्रेलियन, दासिश, स्वानियन |

मुख्य विशेषताएँ

1. ये भाषाएँ मुख्यतः अश्लिष्ट योगात्मक हैं परन्तु इनमें प्रश्लिष्ट योगात्मक के भी कुछ लक्षण मिलते हैं। धातु का शब्द में ही समावेश हो जाता है ।

2. शब्दरूप पूर्वसर्ग और प्रत्यय के योग से बनते हैं ।

3. उत्तरी काकेशी में स्वर कम और व्यंजन अधिक है ।

4. कारकों की संख्या बहुत अधिक है। 'अवर' आदि बोलियों में 30 कारक हैं।

5. कुछ बोलियों (चेचेनिश आदि) में 6 लिंग हैं ।